आषाढ़-भाद्रपद, वि.सं. २०८१
जुलाई-सितम्बर, 2024

(12)

ISSN : 0378-391X
भाग-85, अंक: 3
यूजीसी केयर लिस्ट में सम्मिलित

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

शताब्दी की ओर

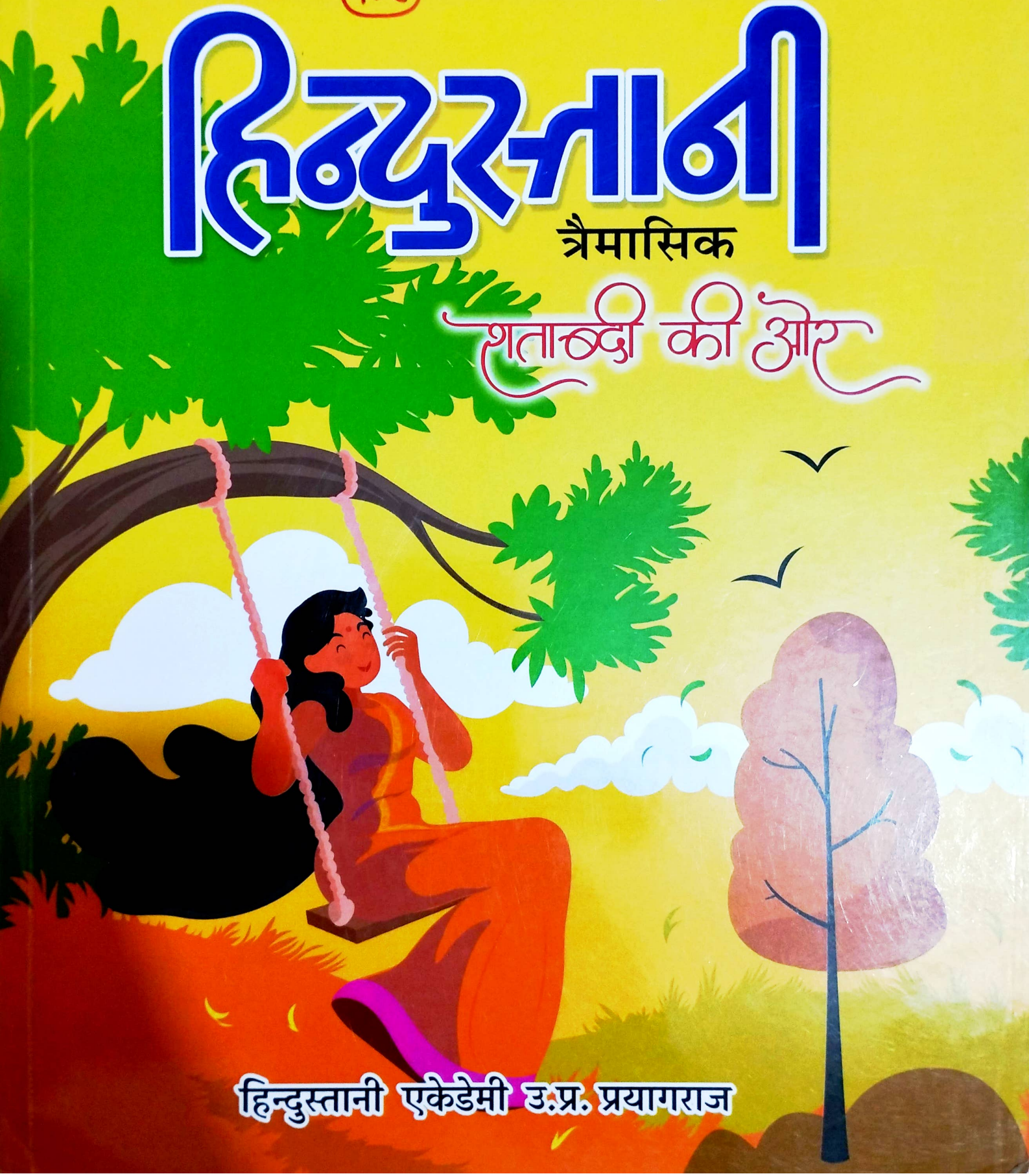

हिन्दुस्तानी एकेडेमी उ.प्र. प्रयागराज

हिन्दुस्तानी

त्रैमासिक

भाग–85, अंक–3
जुलाई–सितम्बर, 2024
आषाढ़–आश्विन, वि. संवत् २०८१

यू.जी.सी. केयर लिस्ट में सम्मिलित
ISSN : 0378-391X

प्रकाशक
हिन्दुस्तानी एकेडेमी
12 डी, कमला नेहरू रोड, प्रयागराज–211001 (उ.प्र.)
दूरभाष : 0532-2407625

website : www.hindustaniacademyup.org.in
email : hindustaniacademyup@gmail.com

समस्त भुगतान हिन्दुस्तानी एकेडेमी, प्रयागराज के नाम मनीआर्डर/बैंक ड्राफ्ट द्वारा भेजें।

शुल्क : एक प्रति ₹ 50.00, वार्षिक : ₹ 200.00
विशेषांक : ₹ 100.00

मुद्रक : आस्था पेपर कन्वर्टर, प्रयागराज

प्रकाशित रचनाओं से हिन्दुस्तानी एकेडेमी या सम्पादक की सहमति अनिवार्य नहीं है। समस्त कानूनी विवादों का न्यायक्षेत्र इलाहाबाद उच्च न्यायालय, उत्तर प्रदेश होगा।

अनुक्रम

- सम्पादकीय
- आलेख
  - वे रहीम अब नाहिं ... 5
  - जांभोजी के सबद का निहितार्थ – आद्या प्रसाद सिंह 'प्रदीप' ...
  - ब्रजभाषा साहित्य में सूरदास एवं अन्य कवियों का योगदान – ब्रजेन्द्रकुमार सिंहल ... 7
  - हिन्दी साहित्य में सुशासन की चेतना – संध्या द्विवेदी ... 11
  - दलित हिंदी साहित्य और जाति व्यवस्था में निहित दर्द और पीड़ा का एक समाजशास्त्रीय विश्लेषण – विजयलक्ष्मी ... 17
  - स्वामी विवेकानन्द के सामाजिक विचारों का वर्तमान शिक्षा पर प्रभाव – उर्मिला यादव ... 22
  - भारतीय राष्ट्रवाद के विकास में द्विवेदी युग का योगदान – रूबी सिंह ... 27
  - ग्लोबल वार्मिंग : तबाही की कगार पर धरती – अरुण कुमार मिश्र ... 36
  - शैव दर्शन : प्रारम्भिक स्वरुप और प्रमुख सम्प्रदाय – आभा त्रिपाठी ... 42
  - नवगीत में नारी विमर्श – बृजेश कुमार पाण्डेय ... 49
  - हिन्दी साहित्य में प्रेम और विवाद : सुरेन्द्रनाथ बन्दोपाध्याय और महादेवी वर्मा की कविता का तुलनात्मक अध्ययन – गरिमा सक्सेना ... 51
  - भिखारी ठाकुर की रचनाओं में समाज सुधार – जी. वसंती ... 58
  - अमीर खुसरो : तथ्य, भ्रांति एवं विरोधाभास – चन्द्रकान्त भट्ट ... 63
  - जायसी की प्रेम साधना – साकेत बिहारी पाण्डेय ... 68
  - समकालीन हिन्दी उपन्यासों के पारिस्थितिक स्त्रीवाद पर फ्रेंच प्रभाव – भूपेन्द्र सिंह देवढ़ियाँ ... 71
  - विद्यानिवास मिश्र के निबंधों में भाषा एवं संस्कृति के विविध आयाम – अविनाश कुमार उपाध्याय ... 79
  - भक्ति आन्दोलन के उद्भव एवं विस्तार में नाथ साहित्य की उपादेयता – दीपमाला ... 82
  - बदलते गाँव का यथार्थ और 'नमामि ग्रामम्' – राजेन्द्र कुमार सेन ... 86
  - पंडिता रमाबाई सरस्वती के नारी सशक्तीकरण के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन – गोरख नाथ तिवारी ... 92
  - संस्कृत-फ़ारसी का परस्पर भाषायी एवं साहित्यिक सम्बन्ध तथा हिन्दी पर फ़ारसी का प्रभाव – संजय शर्मा ... 101
  - हिंदी के क्षेत्र, लोक शैलियाँ और लोक-साहित्य के विविध आयाम – राजेश सरकार ... 106
  - हिंदी के विकास में 'हिंदी साहित्य सम्मलेन' और 'हिन्दुस्तानी एकेडेमी' का योगदान – अभिषेक कुमार सिंह ... 112
  - – पूजा ... 120

- पत्रकारिता का सूर्य गणेश शंकर विद्यार्थी – आलोक मालवीय ... 130
- महासमर में वर्णित अम्बिका की आधुनिक चेतना व मनोविज्ञान – उमा महेश्वर पाण्डेय ... 132
- भवानी प्रसाद मिश्र के काव्य में प्राकृतिक भाव-बोध – प्रणव शर्मा ... 135
- गणेश गम्भीर के नवगीतों में मूल्य बोध – मंजू चौरसिया ... 139
- निर्मल वर्मा के साहित्य में भारत बोध – शुभम कुमारी मिश्रा ... 143
- मानुस पेम भएउ बैकुंठी : पद्मावत में प्रेम दर्शन – अनुपम ... 148
- अरुण कमल के काव्य में अभिव्यंजित ग्राम्य जीवन – श्रुतिकीर्ति अग्निहोत्री ... 153
- रेखांकन – जूही शुक्ला

●●●

पंडिता रमाबाई सरस्वती के नारी सशक्तीकरण के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन

संजय शर्मा

जगत रचना नर-मादा दोनों से हुई और दोनों की भूमिका समान है, न कम न अधिक। इस तथ्य को दरकिनार कर पितृसत्तात्मक समाज ने अपने पक्ष में मानकों को गढ़ उद्घोष किया कि आधी आबादी पुरूष की तुलना में कमतर है। ताज्जुब होता है जिसको परखा ही नहीं गया उसकी क्षमता को जाना ही नहीं गया तो उसको अक्षम कैसे करार दिया गया?

असल बात यह है कि पितृसत्तात्मक समाज ने उनको शिक्षा व रोजगार के अवसरों से वंचित रख कार्यकुशल व आत्मनिर्भर होने नहीं दिया। उनकी वैचारिकी को हाशिए पर रखी। अब समय आ गया है न्याय के साथ संगति बैठाने का और हक देने का, तभी व्यक्ति और समाज का भला होगा। नारी जीवन से जुड़े मुद्दों, चिंतन व लैंगिक सम्बन्धों में लोगों की रूचि तीव्रता से बढ़ी है। नारी मुक्तिकामी चिंतकों ने विचार रखे, सोशल एक्टिविस्टों ने आन्दोलनात्मक रूख अपनाया और नीति-रीति निर्माताओं ने इसको व्यवस्था व कानून की परिधि में ला दिया। शिक्षा प्राप्त कर नारी जागरूक हुई और सशक्तीकरण को बल मिला।

इस सूचना सदी में महिलाओं को प्रेरणा देने वाले मुक्तिकामियों व उनके ग्रन्थों का अन्वेषण भी तेजी से हो रहा है क्योंकि यह महिलाओं के लिए साक्ष्य व आवाज दोनों है। शोध पत्र महिला मुक्तिकामी 'पंडिता रमाबाई सरस्वती के नारी सशक्तीकरण के शैक्षिक प्रयासों' पर केन्द्रित है। इनके विचारों और कार्यों ने महिला जीवन में विद्यमान कुरीतियों के विरुद्ध विद्रोह किया। उन्होंने शिक्षा रूपी हथियार से महिलाओं को लैस करने की बात कही। नारी मुक्ति के लिए किए गए इनके प्रयास भौगोलिक व सांस्कृतिक सरहदें पार कर चुका है। इसके बावजूद इनकी वैचारिकी को वह तब्बज़ो नहीं मिली जिसकी वे हकदार हैं। अध्ययन का उद्देश्य रमाबाई के नारी सशक्तीकरण के शैक्षिक प्रयासों का अध्ययन करते हुए उनको प्रतिष्ठा दिलाना है।

शोध पत्र में द्वितीयक स्रोत प्रयोग में लाए गए है। शोधार्थी ने पंडिता रमाबाई की पुस्तक 'स्त्री धर्म नीति' (1882), 'द हाई कास्ट हिन्दू वूमन' और मुक्ति मिशन की वेबसाइट .... का अध्ययन किया। इसके अतरिक्त पूर्व के अध्ययनों का साहित्यावलोकन भी किया गया जो निम्न है-सुजाता, 'विकल विद्रोहिणी: पंडिता रमाबाई' (2023), 'तर्जनी' (अंक-1,2022), अम्बिका रावत, 'पंडिता रमाबाई : जेंडर और पितृसत्ता सम्बन्धी विचार' (2022), आयशा खान, 'ओवरलुक नो मोर : पंडिता रमाबाई इंडियन स्कालर, फेमिनिस्ट एंड एडुकेटर' (2018), डाफने पिल्लई, सेलिना जॉय, 'वूमंस एजुकेशन इन इंडिया : द पावर ऑफ सेकंड चेन्ज' (2017), वाई सेमुअल, पी वेस्ले, 'सोशल रिफार्म मूवमेंट फॉर इमैन्सिपेशन ऑफ वूमंस इन नाइंटीज एंड टेवन्टी सेन्चुरी इंडिया : ए केस स्टडी ऑफ पंडिता रमाबाई (2017), मीरा कौशाम्बी, 'पंडिता रमाबाई : लाइफ एंड लेंडमार्क' (2016), उमा चक्रवर्ती, 'रिराइटिंग हिस्ट्री: द लाइफ एंड टाइम्स ऑफ पंडिता रमाबाई' (2014), अजय कुमार, 'पंडिता रमाबाई' अजय कुमार, इस्लाम अली (संपा.), 'भारतीय राजनीतिक चिंतन : विचार एवं संकल्पनाएँ (2012), मीरा कौशाम्बी, 'ट्रेसिंग द वाइस : पंडिता रमाबाईज लाइफ थ्रू हर टेक्टस' (2004), 'मदरहुड' (2002), 'वूमंस इमैंन्पिेशन एंड इक्वेलिटी : पंडिता रमाबाई कंट्रीब्यूशन टू वूमंस काज़' (1988), व संहिता जोशी, 'पंडिता रमाबाई: महिला और धार्मिक महिला सशक्तीकरण महिला को स्वतंत्र रूप में सोचने, समझने आत्म निर्णय करने व जीवन जीने की आजादी का नाम है। पैलिनी थूराई का मत है, "महिला सशक्तीकरण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा समाज के विकास की प्रक्रिया में

राजनीतिक संस्थाओं के द्वारा महिलाओं को पुरूषों के बराबर मान्यता दी जाती है।"[1] लीला मीहेन का कहना है, "निडरता सम्मान और जागरूकता तीनों शब्द महिला सशक्तीकरण में सहायक है।"[2] आज महिलाओं को सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक अधिकार दिए बिना बेहतर विश्व, राष्ट्र, समाज व परिवार की कल्पना असम्भव है। यह सब कुछ शिक्षा के द्वारा ही मुमकिन है क्योंकि शिक्षा ही उनकोजागरूक करेगी और सशक्त बनाएगी।

पंडिता रमाबाई कालीन भारत में बाल विवाह, पर्दा प्रथा, बेमेल विवाह, सती प्रथा, बहुविवाह जैसी कुरीतियाँ नारी जीवन में खलल डाले हुए थीं। नारी सम्पत्ति, शिक्षा से वंचित पूर्णरूपेण पुरूष पर आश्रित थी। इस काल में महिलाओं की स्थिति का अवलोकन करते हुए नीरा देसाई लिखती हैं, "वैचारिक रूप से स्त्रियों को पूर्णतः निम्न या तुच्छ प्राणी माना जाता था जो कि पुरूषों से तुच्छ थी, जिनका कोई महत्त्व नहीं था, जिनका कोई व्यक्तित्व नहीं था।"[3] उनको इस स्थिति से निकालने की विधिक, सामाजिक व शैक्षिक पहल राजा राममोहन राय (1774-1883), ईश्वर चन्द्र विद्यासागर (1820-1871), दयानन्द सरस्वती (1827-1883), केशवचन्द्र सेन (1838-1884) द्वारा आरम्भ की जा चुकी थी। इस समय रमाबाई रानाडे (1862-1922), भीका जी कामा (1861-1936) व एनीबेसेन्ट (1846-1933) जैसी महिलाएँ महिला सशक्तीकरण के लिए कार्य कर रहीं थीं। इन सबमें एक विशेष नाम था पंडिता रमाबाई का, जिन्होंने महिलाओं की स्थिति में सुधार लाने के लिए सबसे पहले एवं अनूठी पहल की।[4]

पंडिता रमाबाई को एक रेडिकल नारीवादी चिंतक के रूप में जाना जाता है। इनका जन्म कर्नाटक राज्य के पश्चिमी घाट करकल के पास गंगामूल के जंगल में 23 अप्रैल, सन् 1858 को हुआ। इनके पिता का नाम अनंत शास्त्री डोंगरे और माता का नाम लक्ष्मीबाई डोंगरे था। उनके पिता प्रगतिशील विचारों वाले व्यक्ति थे जिन्होंने पुरानी परम्पराओं और आडम्बरों के विरुद्ध आवाज उठाई। उन्होंने स्त्री शिक्षा का समर्थन किया और उनको संस्कृत की शिक्षा देने की बात कही। उनका तकर् था, 'शास्त्रों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो स्त्रियों को संस्कृत सीखने में मना करें।'[5] उनके पिता को जाति-विरादरी से निकाल दिया गया तब उन्होंने गंगामूल के जंगलों में अपना ठिकाना बनाया जहाँ रमाबाई पैदा हुई। उनके माता-पिता व बहन की मृत्यु सन् 1874 में हो गयी। रमाबाई पर आयी विपत्ति के बारे में ई-पत्रिका 'तर्जनी' लिखती है, 1874 के अकाल के दौरान 6 महीने के भीतर-जुलाई में पिता, अगस्त में माँ और दिसम्बर में बड़ी बहन की मृत्यु हो गयी। इस परिवार की माली हालत इतनी खस्ता हो गयी थी कि कई बार लोगों को शक होता था कि वे ब्राह्मण हैं भी या नहीं। माँ की मृत्यु के समय भाई के अलावा केवल दो ब्राह्मण मिले जिन्होंने अन्तिम संस्कार में सहायता की। अर्थी को उठाने वाली चौथी व्यक्ति थीं रमाबाई। उनका कद छोटा था सो अपने सिर पर उन्होंने अर्थी को रखा था अपने कंधे पर लकड़ी के बड़े-बड़े टुकड़े रखकर माँ को कंधा दिया।[6] विपत्ति झेलते हुए वह निराश हो गयीं और दक्षिण भारत छोड़ कलकत्ता का रुख किया। बड़ा भाई श्रीनिवास, जिनके साथ रमाबाई ने लगभग 4000 हजार किलोमिटर की यात्रा की। प्रायः पैदल। दोनों भाई-बहन को देवी-देवता की तलाश थी और सम्मानजनक काम की भी। दोनों कई दिन भूखे रहे। भूख बर्दास्त नहीं हुई तो पत्तों में लपेटकर कंकड़-पत्थर निगला। कश्मीर में झेलम किनारे ठंड से बचने के लिए उन्होंने दो गढ्ड़े खोदे और गले तक अपने को ढँककर रात काटी। बंगाल पहुँचकर भाई-बहन की यह अनोखी बौद्धिक जोड़ी सार्वजनिक भाषण-प्रवचन में व्यस्त हो गयी।[7] उनके संस्कृत ज्ञान से प्रभावित होकर प्रोफेसर टोनी ने उनको 'शिक्षा की देवी-सरस्वती' कहा। उनके भाषणों ने उन्हें 'पंडिता रमाबाई सरस्वती' के रूप में ख्याति दिलाई। इसी दौरान उनकी मुलाकात केशव चन्द्र सेन से हुई और उनसे प्रेरित हुई और उनको अपना गुरु मान लिया। पंडिता रमाबाई के भाई श्रीनिवास की मृत्यु 8 मई, 1880 की ढ़ाका में हुई। भाई की मृत्यु के दुःख से उबरने के बाद स्वामी दयानन्द सरस्वती के आमंत्रण पर वह मेरठ गयीं। अपने संस्मरण में वह लिखती हैं, "दयानन्द औरतों को धार्मिक शिक्षा देने के पक्षधर थे। वे मानते थे कि स्त्रियाँ वेद पढ़ सकती हैं जिसकी हिन्दू धर्म गवाही नहीं देता था। इस कारण से कि हिन्दू धर्म स्त्रियों और शूद्रों से द्वेष करता था मेरी आत्मा उसकी विद्रोही बन गयी। जहाँ तक उनकी शिक्षा का, स्त्रियों को वेद-दर्शन और धर्मशास्त्रों के पढ़ने का अधिकार देने का सम्बन्ध था, वहाँ तक मैं उनसे प्रसन्न थी।"[8] सन् 1880 में उन्होंने एक गैर ब्राह्मण विपिन बिहारी दास मेघावी से विवाह किया। सन् 1881 में उनको एक पुत्री पैदा हुई जिसका नाम 'मनोरमा' रखा। इसी समय दोनों पति-पत्नी बाल-विधवाओं के लिए एक स्कूल खोलने की योजना बना[9] ही रहे थे कि सन् 1882 में मेघावी का देहान्त हो गया और वे विधवा हो गयीं।

वह प्रार्थना समाज के नेताओं के आग्रह पर सन् 1882 में कलकत्ता छोड़ पूना आ गयीं। पूना में रमाबाई के आने की खूब चर्चा थी। न्यायमूर्ति महादेव गोविन्द रानाडे की पत्नी रमाबाई अपने संस्मरण में लिखती हैं, "खबर आई कि रमाबाई नाम की कोई कोंकणस्थ महिला पूना आई है। लोग कहते थे कि वह संस्कृत की ज्ञाता है, बहुत बुद्धिमान है और उसे भागवत पूरा कंठस्थ है। लोगों का तो यह भी कहना था कि वह काशी के बड़े-बड़े पंडितों को शास्त्रार्थ में हराकर आइर् है और अब पूना में रहने की योजना है। जब मैंने यह सुना मुझे बड़ी खुशी मिली।"[10] पूना आकर उन्होंने 'आर्य महिला समाज' का गठन किया। वे भाषण देने लगीं लोग उनको सुनने लगे और इन सारे गुणों की वजह से वे शिक्षा चाहने वालों के बीच गर्व और प्रशंसा का केन्द्र बन गयीं।[11] रमाबाई द्वारा गठित आर्य महिला समाज का 'मूल उद्देश्य महिला शिक्षा की उन्नति और बाल विवाह का विरोध था।'[12] विजय कुमार वर्मा एवं अखिलेश पाल का कहना है कि 'इसका ध्येय ग्रामीण महिलाओं में शिक्षा का विकास तथा बाल-विवाह रोकना था।'[13] बाल गंगाधर तिलक के अखबार केसरी ने इनके कार्यों की निंदा करते हुए लिखा, 'समाज सुधार पुरूषों का काम है न कि पंडिता महिलाओं का, क्योंकि उन्हें आने वाले लंबे समय तक पुरुषों के नियंत्रण में रहना होगा।'[14]

पंडिता रमाबाई की पुस्तक 'स्त्री धर्म नीति' 1882 में प्रकाशित हुई। मराठी भाषा में लिखी इस पुस्तक का अंग्रेजी में शीर्षक था 'मोरल फॉर वूमंस'। वह पुस्तक में स्त्री शिक्षा पर जोर देते हुए कहती हैं, 'स्त्री की प्रगति की नींव है–आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास। हमारी सबसे बड़ी दौलत है शिक्षा।'[15] इस शिक्षा में पारम्परिक शिक्षा, पाककला, गृहकला से लेकर गणित, भूगोल, राजनीति, अर्थशास्त्र, चिकित्सा विज्ञान, भौतिक विज्ञान आदि सबका शुमार था।[16] रमाबाई लिखतीं हैं, 'शिक्षा आयोग के सर्वेक्षण द्वारा पता चलता है कि हमारे देश में पढ़ी-लिखी महिलाओं की काफी कमी है। हमारे देश में यदि स्त्रियाँ पढ़ती भी हैं तो आठ-नौ वर्ष में उनका स्कूल छुड़वा दिया जाता है। तब तक वे ढ़ग से पढ़ना-लिखना नहीं जान पाती। ब्रिटिश लोगों ने हमारे देश में सरकारी, निजी तथा मिशन के स्कूल खोले हैं, निजी संस्थाएँ तथा जनाना मिशन एजेन्सियाँ भी कार्य कर रही हैं, लेकिन लड़कियों का आठ-नौ वर्ष में ही विवाह करने के कारण उन्हें स्कूल से निकाल लिया जाता है, क्योंकि लड़की का शादी लायक होने के बाद भी पढ़ते रहना शर्मनाक माना जाता है। इसलिए यदि किसी महिला का पति मर जाय तो उसे अपने हाथों में किताबें तथा पेन उठा लेना चाहिए। इससे स्त्री में ज्ञान आएगा तथा वे आत्मनिर्भर बन सकती है। यदि स्त्री को अपना उद्धार करना है तो उसे शिक्षा की ओर अग्रसर होना चाहिए।[17] रमाबाई ने अच्छे नागरिक के लिए शिक्षा जरूरी बताया और कहा कि नारी शिक्षित होगी तभी देश का अच्छा नागरिक बन पाएगी। स्त्रियों के लिए उन्होंने आत्मनिर्भरता और आत्मविश्वास को जरुरी बताया।

संहिता जोशी कहती हैं, "रमाबाई के नारीवादी प्रवचन को उनके मराठी में किए गए काम अर्थात् 'स्त्री धर्म नीति' को गम्भीरता से नहीं लेना चाहिए। इस पुस्तक में रमाबाई महिलाओं के सती-सावित्री मॉडल का सुझाव देती हैं।"[18] मीरा कौशाम्बी लिखतीं हैं, "हालांकि रमाबाई एक नारीवादी कार्यकर्ता थीं, 'स्त्री धर्म नीति' में उनका लेखन आश्चर्य जनक रूप से उन्हें सरोगेट पुरुष सुधारक के रूप में पेश करता है। 'स्त्री धर्म नीति' में रमाबाई ने अनपढ़ और मूर्ख महिलाओं को खुद को आत्मनिर्भर, आत्मशिक्षित अच्छी पत्नियों और माताओं के रूप में ढ़ालने का सुझाव दिया।[19] रमाबाई की 'स्त्री धर्म नीति' उनके परवर्ती क्रान्तिकारी नारीवादी विचारों से कई जगह मेल नहीं खाती है। इसे उनकी वैचारिक यात्रा के आरम्भिक पड़ाव के रूप में देखने की जरुरत है।[20]

सन् 1883 में रमाबाई ब्रिटेन चली गयी। 29 सितम्बर सन् 1883 को रमाबाई तथा उनकी बेटी मनोरमा ने धर्मान्तरण कर इसाई धर्म अपना लिया तथा वे इग्लैंड के चर्च में दीक्षा गुरु बन गयीं।[21] वह सन् 1886 में भारत लौटी और पुन: उसी वर्ष अमेरिका चली गयी। वहाँ उच्च जाति की भारतीय विधवाओं के लिए विधवा आश्रम खोलने के लिए धन एकत्रित करने के उद्देश्य से सन् 1887 में 'रमाबाई एसोसिएशन' की स्थापना की। उसी वर्ष उनकी पुस्तक 'द हाई-कास्ट हिन्दू वूमन' प्रकाशित हुई। चंदे और पुस्तक से उन्होंने 60,000 रुपया जुटाया।[22] यह पुस्तक हिन्दू धर्म की आलोचना करते हुए दिखाई देती है। इसमें उनका रेडिकल विचार है। अजय कुमार कहते हैं, "पंडिता रमाबाई की 'द हाई-कास्ट हिन्दू वूमन' ऐसी पुस्तक है जो पहला नारीवादी मैनीफेस्टो है। जिसमें हिन्दू स्त्री के जीवन की मुख्य दशाओं पर काफी आलोचनात्मक रूप से जोर डाला गया है जैसे-हिन्दू स्त्री का बचपन, उसका वैवाहिक जीवन और उसका वैधव्य।[23] रमाबाई सन् 1889 में भारत लौटी और बम्बई (चैपाटी) में शारदा सदन की स्थापना की। जस्टिस

रानाडे, भंडारकर, तेलंग जैसे नेताओं ने इसको समर्थन दिया। क्रिश्चियन वीकली नामक पत्रिका ने अपनी रिपोर्ट (1889) में कहा कि 'इस समय शारदा सदन में सात युवा विधवाएं हैं जिनमें से दो ने ईसाइयत के प्रति अपना इजहार किया है।'[24] बाल गंगाधर तिलक के अखबार 'केसरी' ने आरोप लगाया कि यहाँ स्त्रियों का धर्मान्तरण हो रहा है। पत्र ने कहा यदि वे चाहती हैं लोग उनपर भरोसा करें तो अपना आचरण सही रखें।[25] शारदा सदन की धर्मान्तरण को लेकर आलोचना होने लगी तो रानाडे और भंडारकर ने सदन छोड़ दिया, ज्योतिबाफूले ने इसकी प्रशंसा की। शारदा सदन वित्तीय समस्या से जूझ भी रहा था। इसी वजह से इसको नवम्बर, सन् 1890 में पूणे स्थानान्तरित कर दिया गया।[26] पहला किंडरगार्टन शिक्षक को शारदा सदन ने ही प्रशिक्षित किया था।[27]

सन् 1882 में गठित ब्रिटिश शिक्षा आयोग जिसको हंटर कमीशन के नाम से जाना जाता है, पूना आया तो रमाबाई ने उसका स्वागत किया। उन्होंने 5 सितम्बर, सन् 1992 में हंटर कमीशन के समक्ष अपनी गवाही दी। हंटर कमीशन ने उनसे तीन सवाल किया जिसका उन्होंने जवाब दिया। वह सवाल-जवाब निम्नवत् है[28]–

1. हंटर कमीशन शिक्षा पर आपके अनुभव व विचार क्या है?

   रमाबाई का जवाब 'मैं उस व्यक्ति की संतान हूँ जिसे स्त्री शिक्षा का समर्थन करने पर कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। मैं आजीवन स्त्रियों के लिए कार्य करना अपना दायित्व समझती हूँ।

2. हंटर कमीशन लड़कियों के लिए बेहतर अध्यापिकाएं उपलब्ध कराने का बेहतर तरीका क्या है?

   रमाबाई का जवाब 'मेरा अनुभव इस बात को प्रमाणित करता है कि जो स्त्रियाँ अध्यापिकाएं बनना चाहती हैं, उनको पर्याप्त प्रशिक्षिण दिया जाए।' रमाबाई ने एक शैक्षिक परिसर, छात्रवृत्ति और स्त्रियों को अधिक वेतन देने का भी सुझाव दिया।

3. हंटर कमीशन वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में दोष क्या है और इसे दूर करने के लिए क्या करने की आवश्यकता है?

   रमाबाई का जवाब, 'इस देश की स्त्रियाँ संकोची स्वभाव की है। लड़कियों के विद्यालय का भार स्त्री शिक्षिकाओं के हाथ में होना चाहिए। 100 में से 99 मामलों में देश का सुशिक्षित पुरुष-स्त्री शिक्षा का, स्त्री उन्नति के विरोध में है। अगर उन्हें कोई छोटी सी गलती दिख जाती है तो वे राई का पहाड़ बना देते हैं। स्त्री के चरित्र को खराब करने का प्रयास करते हैं। वह कहती हैं कि देश की संकोची स्त्रियाँ किसी पुरुष को अपनी बीमारी बताने के बजाय चुपचाप बीमारी से मर जाती हैं। अतएव हजारों लाखों स्त्रियों की अकाल मृत्यु, असमय मृत्यु को रोकने के लिए स्त्री चिकित्सकों की आवश्यकता है। उन्होंने सरकार से यह अपील की कि स्त्रियों को मेडिसिन पढ़वाने की सुविधा उपलब्ध करवाए और जनसाधारण के जीवन की रक्षा करें। भारत में स्त्री चिकित्सकों की गहरी आवश्यकता अनुभव की जा रही है और यह इस देश की स्त्रियों की शिक्षा में एक बहुत बड़ी कमी है। संहिता जोशी का कहना है, "उन्होंने महिलाओं को शिक्षक और स्कूलों के निरीक्षक बनने के लिए शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने की अपील करके नारीवादी प्रवचन में एक नया विवादस्पद क्षेत्र जोड़ा।"[29]

सन् 1894 में रमाबाई केडगाँव रहने लगी और वहाँ पर मुक्ति सदन की स्थापना की। केडगाँव के लोगों ने उनको हतौत्साहित करते हुए कहा कि जमीन पथरीली है और पानी नहीं मिलेगा।[30] सन् 1895 में उनका स्कूल हाई स्कूल हो गया। इस संस्था ने काफी जल्द उन्नति की। इसने वर्ष 1900 में ही लगभग 2000 बच्चों तथा महिलाओं ने टेट्रनिंग करने वाले प्रभाग में विभिन्न प्रभागों के शिक्षिका तथा औद्योगिक प्रभागों में महिलाओं ने व्यवसायिक प्रशिक्षण तथा शिक्षा प्रदान करने में सक्षम बनने के लिए दाखिला लिया जो अधिकतर आत्मनिर्भर बनना चाहती थीं।[31] रमाबाई ने मथुरा, वृन्दावन में दुदर् शा झेल रही महिलाओं और गुजरात में अकाल झेल रही महिलाओं की मदद की। उनकेद्वारा सन् 1898 में पथभ्रष्ट स्त्रियों के लिए एक उद्धार घर शुरु किया गया। जिसका नाम कृपा सदन रखा गया। छः लड़कियों से आरम्भ हुए कृपा सदन में तीन साल के अन्दर लड़कियों की संख्या 600 हो गयी। कृपा सदन के

सामने सड़क पार मुक्ति सदन था। कृपा सदन के बगल में एक मातृगृह बनाया गया।[32]

रमाबाई के कार्यों में सहयोग करने वाली उनकी पुत्री मनोरमा का निधन सन् 1921 में हो गया। महिलाओं की शिक्षा के लिए जीवनपर्यन्त काम करने वाली महिला मुक्तिकामी अधिक दिनों तक पुत्री की मृत्यु के बाद जीवित न रह सकीं। अपने देश की स्त्रियों को पद दलित अवस्था से ऊपर उठाकर लाने का प्रयास करते हुए 5 अप्रैल, सन् 1922 को 64 वर्ष की अवस्था में रमाबाई का देहान्त हो गया।[33] बम्बई में सन् 1922 में उनकी याद में एक बैठक हुई जिसमें सरोजनी नायडू ने कहा था, "पंडिता रमाबाई वो पहली इसाई महिला हैं जिन्हें हिन्दू संतों में गिना जायेगा।"[34]

पंडिता रमाबाई सरस्वती के सम्मुख अन्य समकालीन महिला मुक्तिकामियों की अपेक्षा चुनौतियाँ अधिक थी। ब्राह्मण जाति की महिला होने के बावजूद हिन्दू धर्म की व्यवस्था का विरोध किया। हिन्दू धर्म में निहित पाखण्डों व पितृसत्ता का विरोध किया। उन दिनों बाल विवाह, बेमेल विवाह, वैधव्य जीवन से जुड़ी समस्या, महिलाओं को सम्पत्ति व शिक्षा से वंचित रखने जैसी समस्या विद्यमान थी। रमाबाई ने इन ताने-बाने को ध्वस्त कर समता स्थापित करने व शिक्षा देने की बात कही। उन्होंने महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए उनमें कार्य कुशलता व आत्मनिर्भरता लाने की बात कही। उन्होंने महिलाओं को इंजीनियरिंग, नर्सिंग, मेडिकल की शिक्षा देने की बात की। संहिता जोशी का कहना है कि, "रमाबाई के प्रयासों का एकमात्र फोकस महिलाओं की शिक्षा थी क्योंकि उनका दृढ विश्वास था कि महिलाओं की शिक्षा उन्हें पितृसत्ता और धार्मिक रुढ़िवाद के पिंजरे से मुक्त कर सकती है।"[35] रमाबाई पर केन्द्रित पत्रिका तजर् नी का कहना है, "शिक्षा के क्षेत्र में उनका बड़ा योगदान रहा है। उन्होंने लड़कियों-औरतों उनमें भी बाल विधवाओं, बेसहारा औरतों, अकाल पीड़ितों की शिक्षा के लिए कदम उठाया एवं आश्रम खोला। वह ऐसा आवासीय विद्यालय था जहाँ स्वतंत्र जीवन जीने के हुनर सीखे-सिखाए गए। रमाबाई के लेखन भाषण और संस्थान-निर्माण में केवल स्त्री-स्वर की पुख्तगी ही नहीं दिखती, बल्कि स्त्री के नजरिए को समझने में मदद भी मिलती है। उनके सवाल जाति, धर्म, सबसे है। ताज्जुब नहीं कि उनपर जाति द्रोह, धर्म द्रोह, राजद्रोह सबका आरोप लगा। लेकिन उनका कहना था-भय नाही खेद नाही।"[36] गेल ओम्बेट ने अपनी पुस्तक, 'सीकिंग बेगमपुरा: दि सोशल वीजन ऑफ एन्टीकास्ट इन्टएक्चुअल' में लिखा है, 'रमाबाई स्थापित मुक्ति सदन' एक आदर्श स्त्री समुदाय को स्थापित करने का प्रयास था जिसे भारत में एक नए येरुसलम की संज्ञा दी जा सकती है। यहाँ स्त्रियों ने बुनाई, डेयरी, फार्मिंग, कुकिंग, बागवानी, कृषि आदि से लेकर प्रिंटिंग प्रेस तक चलाई।"[37] उमा चक्रवर्ती कहती हैं, 'मुक्ति सदन ने केवल जाति-विभेदों को ही नजर अंदाज नहीं किया बल्कि आजीविका तथा लाभकारी उत्पादन के सभी क्षेत्रों में महिलाओं को प्रशिक्षण प्रदान करने के साथ-साथ लैगिंक विभेदीकरण को भी स्वीकार किया।[38] अजय कुमार का मत है, 'ऐसा कहा जा सकता है कि वे भारतीय इतिहास में महिलाओं के अधिकारों को प्राप्त करने के लिए चैम्पियन के तौर पर थीं, दूसरी ओर वे महिला शिक्षा एवं समाज सुधार की अग्रदूत रही। वह पहली ऐसी महिला थीं जिन्होंने भारत में शिक्षा के क्षेत्र में बाल विहार व्यवस्था शुरु की तथा भारतीय स्कूली शिक्षा में व्यवसाय को भी शामिल किया। वह पहली ऐसी महिला थीं जिन्होंने हिन्दू समाज की विधवाओं की दासता की जंजीरो को तोड़ा तथा भारत में महिला मुक्ति के आन्दोलन की नींव रखी और इस प्रकार भारतीय बालिकाओं में शिक्षा की शुरुआत हुई।"

पंडिता रमाबाई सरस्वती ने महिला सशक्तीकरण के लिए शिक्षा को अपरिहार्य बताया। उनको कार्यकुशल व आत्मनिर्भर होने की जरुरत पर बल दिया। उन्होंने जिन मुद्दों को लेकर लड़ाई लड़ी वह आज भी प्रासंगिक है। उन्होंने जो बातें उन्नीसवीं सदी में कही वे बातें आज की सूचना सदी में भी सही है। भविष्य में उनके विचारों व कार्यों के संदर्भ में अध्ययन करने की आवश्यकता है ताकि लोग उनके विचारों व कार्यों को जानें। सशक्तीकरण के लाख प्रयत्नों के बावजूद आज भी नारी जीवन में खलल डालने वाले तत्त्व मौजूद है। बहुत सारे विचार ऐसे हैं जो उनके हौसले तोड़ते हैं, पंखो को कतरने का प्रयास जारी है। आज भी अंधविश्वास, हठधर्मिता और अतार्किक नैतिकता द्वारा वे शासित हो रहीं हैं। क्यूँ? यह एक सार्वभौमिक परम्परा है जो पीढ़ी दर पीढ़ी जारी है। इससे मुक्ति की ज़रुरत है और यह काम 'पंडिता रमाबाई सरस्वती' जैसे मुक्तिकामियों के विचारों से प्रेरणा लेकर ही सम्भव है।

सन्दर्भ :

1. पैलिनी थूराई, 'इंडियन जर्नल ऑफ पब्लिक एडमिनिस्ट्रेशन', जनवरी-मार्च, 2001, पृ. 39
2. लीला मीहेन, 'अचीवमेंट एंड चैलेन्ज स्कीम', अगस्त 2001, पृ. 56

3. नारी देसाई कथन, अजय कुमार, "पंडिता रमाबाई", अजय कुमार, इस्लाम अली (संपा.), 'भारतीय राजनीतिक चिंतक : संकल्पनाएँ एवं विचारक', डार्लिंग किंडरस्ले प्राइवेट लिमिटेड, नोएडा, 2012, पृ. 192
4. कुप्पुस्वामी, 'सोशल चेंज इन इंडिया', विकास पब्लिकेशन, यू.पी., 1972, पृ. 249-251
5. अनंत शास्त्री डोंगरे कथन, अजय कुमार, "पंडिता रमाबाई' वही,
6. तर्जनी, अंक-1, अप्रैल, 2022, पृ. 7
7. वही, पृ. 9
8. वही, पृ. 66
9. अजय कुमार, वही, पृ. 149
10. रमाबाई रानाडे संस्मरण, तर्जनी, वही, पृ. 69
11. वही, पृ. 71
12. मीरा कौशाम्बी, "इंडियन रिसपोंस टू क्रिश्चिएनिटी, चर्च एण्ड कोलोनिज्म : द केस ऑफ पंडिता रमाबाई", इकोनामी एंड पोलिटिकल वीकली, 24-31 अक्टूबर, 1992, डब्ल्यू.एस. 62
13. विजय कुमार वर्मा, अखिलेश पाल, 'आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिंतन', ओरियंट ब्लैकस्वॉन, हैदराबाद, 2019, पृ. 38
14. संहिता जोशी, 'पंडिता रमाबाई: महिला और धार्मिक प्राधिकरण', https://egyankosh.ac.in/bitstream/unit3.pdf पृ. 49, देखा गया 19 जनवरी, 2024
15. रमाबाई कथन, 'उभरता स्वर: स्त्री धर्म नीति', तर्जनी, वही, पृ. 32
16. उभरता स्वर : स्त्री धर्म नीति, वही, पृ.
17. रमाबाई कथन, एस.एम. अवध, 'पंडिता रमाबाई', द क्रिश्चियन लिटरेचर सोसायटी, मद्रास, 1979, पृ. 24-25 व मारिया ईसावेल क्रूस, "पंडिता रमाबाई: चैम्पियन ऑफ वूमंस इमैन्सिपेशन", इंडिया पर्सपेक्टिव वाल्यूम-18, अंक-6, जून, 2005
18. संहिता जोशी, वही, पृ. 55-56
19. मीरा कौशाम्बी कथन, संहिता जोशी, वही, पृ. 56
20. उभरता स्वर: स्त्री धर्म नीति, वही, पृ. 36
21. अजय कुमार, वही, पृ. 195
22. ए.बी. शाह, "पंडिता रमाबाई के पत्र और पत्राचार" गेराल्डिन (संक.), 'बाम्बे: महाराष्ट्र स्टेट बोर्ड फॉर लिटरेचर एंड कल्चर', 1977, पृ. 21
23. अजय कुमार, वही, पृ. 198
24. क्रिश्चियन वीकली, 1889
25. केसरी, 12 फरवरी, 1889
26. ए.बी. शाह, वही
27. वाई सेमुअल, पी. वेस्ले, 'सोशल रिफार्म मूवमेंट फॉर इमैन्सिपेशन ऑफ वूमंस इन नाइंटीज एंड टेवेन्टी सेन्चूरी इंडिया: ए स्टडी ऑफ इंटरनेशनल जनरल ऑफ सोशल सांइस' वाल्यूम-3, इश्यू-2, 2017, पृ. 1139
28. पंडिता रमाबाई सरस्वती, 'हंटर कमीशन में गवाही' शंभू जोशी (अनु.) तर्जनी, अंक-1, अप्रैल 2022, पृ. 42
29. संहिता जोशी, वही,
30. आर.के. ओगरे, जे.एफ. पैटरसन, पंडिता रमाबाई: ए लाइफ ऑफ प्रेयर क्रिश्चियन लिटरेचर सोसाइटी, मद्रास, 1963, पृ. 18
31. अजय कुमार, वही, पृ. 196
32. निकोल मैकनिकोल, विशाल मंगलवाड़ी, 'वॉट लिबरेट्स ए वूमेन: ए स्टोरी ऑफ पंडिता रमाबाई ए बिल्डर ऑफ मॉर्डन इंडिया', गुड बुक्स डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लिमिटेड, कलकत्ता, 1926, पृ. 156-157
33. सोनिया हजाई, 'लीडर विजनरी एण्ड सीकर', स्टुडेन्ट, www.eqalitydepat.com
34. एलाइज थार्नर, मैत्री कृष्णराज (संपा.) आइडियल्स, इमेजेस एण्ड रीयल लाइन्स: वूमेन इन लिटरेचर एण्ड हिस्ट्री', समीक्षा ट्रस्ट फॉर ओरियंट, लांगमेन, 2000
35. संहिता जोशी, वही, पृ. 56
36. तर्जनी, वही, पृ. 5
37. गेल ओम्वेट, 'सीकिंग बेगमपुरा: दि सोशल वीजन ऑफ एन्टीकास्ट इंटरएक्चुअल', नवयान प्रकाशन, 2009 व अजय कुमार, वही, पृ. 212
38. उमा चक्रवर्ती कथन अजय कुमार, वही

डॉ. संजय शर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान
सहकारी पी.जी. कॉलेज, मिहरचंं, जौनपुर
मो.-9454695377